शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०१-२०१९

वर्ष - ३० अंक - १ जनवरी २०१९ विक्रम संवत् २०७५ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

यह हमारा कर्तव्य है कि, हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएँ। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आजादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए।

– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

क्रीडा भारती मध्यक्षेत्र के साथ अ.भा. नियामक मंडल की बैठक, रायपुर (छ.ग.) में 26 से 28 अक्टूबर 2018 को सम्पन्न

क्रीडा भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन, धनबाद (झारखण्ड) में भाग लेने नागपुर से साइकिल से निकले प्रतिभागियों का छत्तीसगढ़ में हुआ भव्य स्वागत (22 दिसम्बर 2018)

गुरु घासीदास जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बिलासपुर (छ.ग.) ने जैतखंभ की पूजा अर्चना के बाद निकाला घोष-संचलन (18 दिसम्बर 2018)

रा.स्व. संघ, खण्ड-लोरमी (जि. मुंगेली, छ.ग.) के सेवा विभाग द्वारा आयोजित स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, डोंगरीगढ़-16 दिसम्बर 2018

सुभाषित

लोभमूलानि पापानि संकटानि तथैव च।
लोभात्प्रवर्तते वैरं अतिलोभात्विनश्यति॥

अर्थात्– लोभ पाप और सभी संकटों का मूल कारण है, लोभ शत्रुता में वृद्धि करता है, अधिक लोभ करने वाला विनाश को प्राप्त होता है।

संपादकीय

हमें याद है, गत 21 अक्टूबर 2018 को हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले पर तिरंगा फहराया था। आजाद हिन्द सरकार के पहले प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने ऐलान किया था कि, दिल्ली के लाल किले पर एक दिन पूरी शान से तिरंगा फहराया जाएगा। देश की राजधानी में लाल किले की प्राचीर पर लहराता राष्ट्रध्वज, यह नेताजी का सपना था। उस सपने को साकार करने के प्रतीक के रूप में यह राष्ट्रध्वज नेताजी के प्रधानमंत्री बनने के 75 वर्ष बाद जाकर अब फहराया गया।

आजाद हिन्द सरकार ने एक ऐसा भारत बनाने का वादा किया था, जिसमें सभी के पास समान अधिकार हो, सभी के पास समान अवसर हो और अपनी प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा लेकर गौरवपूर्ण बनाने वाले सुखी और समृद्ध भारत का निर्माण करें। आजाद हिन्द सरकार ने एक ऐसा भारत बनाने का वादा किया था, 'बांटो और राज करो' की उस नीति को जड़ से उखाड़ फेंकने का, जिसकी वजह से देश सदियों तक गुलाम रहा था।

यह उनका सपना इतना बड़ा हैं कि, 75 वर्ष बाद वह प्रतीक के रूप में फिर जीवित हुआ। उसे जीवित रहना ही था, क्योंकि उस सपने में नेताजी सरीखे अनेक महापुरुषों की जान बसी है। वह सपना भारतीयता का हैं और यह सपना हमेशा जीवित रहेगा। आईए फिर से याद करें उस महापुरुष को जिसने कहा था—

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

ए महिना के तिहार

ए महिना के पहिली तिहार पाँच तारीक के पूस अमावस परिही। चौदहा तारीक के मकर संक्रांति अऊ छब्बीस तारीक के लोकतंत्र के बड़का तिहार गणतन्त्र दिवस मनाए जाही। महिना के पहिली एकादसी (सफला) एक तारीक, दूसर एकादसी (पुत्रदा) सत्तरा तारीक अऊ तीसर एकादसी (षट्तिला) इकतीस तारीक के परिही।

सफला एकादशी	**– पौष कृ. 11**	**– 01 जनवरी**
पौषी अमावस्या	**– पौष कृ. 15**	**– 05 जनवरी**
मकर संक्रान्ति	**–**	**– 14 जनवरी**
पुत्रदा एकादशी	**– पौष शु. 11**	**– 17 जनवरी**
गणतंत्र दिवस	**–**	**– 26 जनवरी**
षट्तिला एकादशी	**– माघ कृ. 11**	**– 31 जनवरी**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग ग्यारा तारीक के लालबहादुर शास्त्री, इक्कीस तारीक के रासबिहारी बोस अऊ हेमू कालाणी, तीस तारीक के महात्मा गांधी अऊ पं. माखनलाल चतुर्वेदी के पुण्यतिथि घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म नौ तारीक के प्रवासी भारतीय दिवस, दस तारीक के विश्व हिंदी दिवस, बारा तारीक के राष्ट्रीय युवा दिवस, पन्द्रह तारीक के भारतीय थलसेना दिवस के संगे संग राष्ट्रीय बालिका दिवस अऊ तीस तारीक के कुष्ठ रोग निवारण दिवस घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार – जय माँ भारती।

8 साल के समन्यु ने फहराया सबसे ऊँची पहाड़ पर तिरंगा

इससे पहले समन्यू ने अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी पर भी चढ़ाई की थी

सबसे कम उम्र के पर्वतारोही का विश्व कीर्तिमान अपने नाम करने वाले आठ साल के समन्यु पोतुराजू ने एक और उपलब्धि प्राप्त कर ली है। तेलंगाना के समन्यु ने गत 12 दिसम्बर को ऑस्ट्रेलिया की सबसे ऊँची चोटी माउंट कुशिउसज्को पर तिरंगा फहराकर भारत का नाम रोशन किया है। इससे पहले समन्यू पोतुराजू ने अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी पर भी चढ़ाई की थी।

माँ, बहन व कोच से मिली प्रेरणा : समन्यु ने बताया कि मां लवन्या और कोच थाम्मिनेनी भारत से उन्हें सबसे अधिक प्रेरणा मिलती है। इससे पहले समन्यु ने मां, कोच और अन्य लोगों की टीम के साथ तंजानिया के माउंट किलिमान्जरो के उहुरू चोटी की चढ़ाई की थी। 2 अप्रैल 2018 को उन्होंने समुद्र तल से 5895 मीटर की ऊँचाई पर तिरंगा भी लहराया था।

हैंडलूम के कपड़े पहने : हैंडलूम को प्रोत्साहित करने के लिए समन्यु के साथ पहाड़ पर चढ़ने वाली टीम ने तेलंगाना हैंडलूम के कपड़े पहने थे। मां लवन्या ने बताया कि हर बार उनकी टीम एक उद्देश्य को पूरा करने की योजना बनाती है।

समन्यु ने बनाया था विश्व कीर्तिमान : माउंट किलिमान्जरो पर चढ़ने के दौरान समन्यु ने विश्व कीर्तिमान बनाया था। इससे पहले इस पहाड़ पर सबसे कम उम्र में चढ़ने का कीर्तिमान अमेरिका के मोन्टन्ना केन्ने के नाम था, लेकिन उनसे 3 दिन कम उम्र में चढ़ाई करने का कीर्तिमान समन्यु के नाम हो गया था।

माउंट फूजी पर करने जा रहे हैं चढ़ाई—समन्यु ने इस सफलता के बाद कहा कि अभी तक मैंने चार ऊँची चोटियों पर सफलता पाई हैं और अब जापान के माउंट फूजी पर चढ़ाई के लिए तैयारी कर रहा हूँ। समन्यु ने बताया कि वह आगे चलकर पायलट बनना चाहता है। ज्ञात हो कि, समन्यु इससे पहले तंजानिया के माउंट किलिमंजारो को भी फतह कर चुका हैं।

प्रेरक प्रसंग

सौजन्यता

एक बार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों ने एक मल्लाह की नौका को क्षति पहुँचा दी। इससे वह छात्रों को तथा तत्कालीन उपकुलपति महामना मालवीयजी को कोसता हुआ मालवीयजी के निवास-स्थान पर आया। उस समय मालवीयजी के यहाँ कोई महत्वपूर्ण बैठक चल रही थी। मल्लाह की बकवास सुनकर सभी क्षुब्ध हो उठे, किन्तु करुणा-मूर्ति मालवीयजी जरा भी विक्षुब्ध नही हुए। इतना ही नहीं, उन्होंने अश्रुपूरित नेत्रों से मल्लाह की ओर देखा और वे उसके चरण-स्पर्श करते हुए बोले, ''भाई! लगता है मुझसे तुम्हारा कोई महान् अपराध हुआ है। मुझे क्षमा करें और कृपा करके बताइए कि मैं किस अपराध के लिए दोषी हूँ ?''

मल्लाह को स्वप्न में भी आशा न थी कि मालवीयजी उससे इतनी विनम्रता का व्यवहार करेंगे। वह एकदम पानी-पानी हो गया। बहुत आग्रह करने के बाद बड़ी मुश्किल से वह सारी घटना सुना सका, किन्तु मालवीयजी की सौजन्यता से इतना प्रभावित हुआ कि बिना कुछ सुने-सुनाएँ ही सबको दुआएँ देता हुआ वहाँ से चलता बना।

गौरवमयी थाती

आजाद हिन्द सरकार की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 21 अक्टूबर को लाल किला परिसर में तिरंगा फहराकर देश के वीर सपूत नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की पुण्य स्मृति को नमन किया। इस दौरान उन्होंने आजाद हिन्द संग्रहालय का उद्घाटन भी किया और लाल किले की बैरक संख्या तीन में एक पट्टिका का अनावरण किया, जहाँ कभी आजाद हिन्द फौज के सदस्यों पर मुकदमा चलाया गया था। कार्यक्रम में नेताजी के परिवार के सदस्यों समेत आजाद हिन्द फौज के उनके अनेक तत्कालीन सहयोगी भी मौजूद थे। आजाद हिन्द फौज के सदस्य श्री लतीराम, नेताजी के पौत्र चंद्रकुमार बोस विशेष रुप से उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने भावभीने संबोधन में प्रधानमंत्री ने देश के स्वातंत्र्य संघर्ष में नेताजी और उनके द्वारा गठित आजाद हिन्द फौज के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारत को किसी एक परिवार की वजह से आजादी नहीं मिली। भारत की आजादी में सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. भीमराव आंबेडकर और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अप्रतिम योगदान को भुलाने का भरसक प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कई महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित विषयों का उल्लेख किया। प्रस्तुत हैं उनके वक्तव्य के कुछ महत्वपूर्ण अंश—

अखंड भारत की सरकार थी आजाद हिन्द सरकार

वे वही लाल किला है, जहाँ पर विजय संचलन का सपना नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 75 वर्ष पूर्व देखा था। आजाद हिन्द सरकार के पहले प्रधानमंत्री के रुप में शपथ लेते हुए नेताजी ने ऐलान किया था कि इसी लाल किले पर एक दिन पूरी शान से तिरंगा लहराया जाएगा। आजाद हिन्द सरकार अखंड भारत की सरकार थी। साथियों, अपने लक्ष्य के प्रति जिस व्यक्ति का इतना साफ ध्येय था। लक्ष्य को हासिल करने के लिए जो अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए निकल गया हो, जो सिर्फ और सिर्फ देश के लिए समर्पित हो, ऐसे व्यक्ति को याद करने भर से ही पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेरित हो जाती है। मैं नतमस्तक हूं उन सैनिकों और उनके परिवारों के आगे जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। मैं पूरे विश्व में फैले उन भारतवासियों को भी स्मरण करता हूँ जिन्होंने नेताजी के इस मिशन को तन-मन-धन से सहयोग किया था और स्वतंत्र, समृद्ध, सशक्त भारत बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया था।

आजाद हिन्द सरकार, ये सिर्फ नाम नहीं था बल्कि नेताजी के नेतृत्व में इस सरकार द्वारा हर क्षेत्र से जुड़ी योजनाएं बनाई गई थीं। इस सरकार का अपना बैंक था, अपनी मुद्रा थी, अपना डाक टिकट था, अपना गुप्तचर तंत्र था। देश के बाहर रहकर, सीमित संसाधनों के साथ, शक्तिशाली साम्राज्य के खिलाफ इतना व्यापक तंत्र विकसित करना ये असाधारण कार्य था।

नेताजी ने एक ऐसी सरकार के विरुद्ध लोगों को एकजुट किया, जिसका सूरज कभी अस्त नहीं होता था, दुनिया के एक बड़े हिस्से में जिसका शासन था। अगर नेताजी की खुद की लेखनी पढ़ें तो हमें ज्ञात होता है कि

यह दिन न केवल ऐतिहासिक दिन है बल्कि देश के लिए बड़े गौरव का दिन है। जब देश के प्रधानमंत्री द्वारा आजाद हिन्द फौज के सैनानियों का सम्मान किया गया। इसे देखकर मन प्रफुल्लित हो गया।

— मेजर जनरल (से.नि.) डॉ. जी.डी. बख्शी

वीरता के शीर्ष पर पहुंचने की नींव कैसे उनके बचपन में ही पड़ गई थी।

जब किशोर सुभाष बने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

सैकड़ों वर्षों की गुलामी ने देश का जो हाल किया था, उसकी पीड़ा सुभाष बाबू ने अपनी मां से पत्र द्वारा साझा की थी। उन्होंने अपनी माँ से पत्र में सवाल पूछा था कि माँ क्या हमारा देश दिनों-दिन और अधिक गिरता जाएगा ? क्या भारत माता का कोई एक भी पुत्र ऐसा नहीं है जो पूरी तरह अपने स्वार्थ को तिलांजलि देकर, अपना संपूर्ण जीवन भारत मां की सेवा में समर्पित कर दे ? बोलो मां, हम कब तक सोते रहेंगे ? भाइयों और बहनों, इस पत्र में उन्होंने माँ से पूछे गए सवालों का उत्तर भी दे दिया था। उन्होंने अपनी माँ को स्पष्ट कर दिया था कि अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। हमको अपनी जड़ता से जागना ही होगा और कर्म में जुट जाना होगा। अपने भीतर की इस तीव्र उत्कण्ठा ने किशोर सुभाष बाबू को नेताजी सुभाष बना दिया। नेताजी का एक ही उद्देश्य था- भारत की आजादी।

चुनौती पार करते गए, साजिश को नाकाम करते गए

सुभाष बाबू को अपने जीवन का लक्ष्य तय करने, अपने अस्तित्व को समर्पित करने का मंत्र स्वामी विवेकानंद और उनकी शिक्षाओं से मिला- **आत्मानोमोक्षार्थम जगत् हिताय च** यानी जगत की सेवा से ही मुक्ति का मार्ग खुलता है। उनके चिंतन का मुख्य आधार था- जगत की सेवा। अपने भारत की सेवा के इसी भाव की वजह से वे हर यातना सहते हुए, हर चुनौती को पार करते गए, हर साजिश को नाकाम करते गए।

देश ही नहीं, दूसरे देश के भी थे नायक

सुभाष बाबू ने जो विश्वमंथन किया, उसका अमृत सिर्फ भारत ने ही नहीं चखा बल्कि इसका लाभ दूसरे देशों को भी हुआ। जो देश उस समय अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, उन्हें सुभाषचन्द्र को देख प्रेरणा मिलती थी। उन्हें लगता था कि कुछ असंभव नहीं है। हम भी संगठित होकर अंग्रेजों को ललकार सकते हैं। महान स्वतंत्रता सेनानी नेल्सन मंडेला ने भी कहा था कि दक्षिण अफ्रीका के छात्र आंदोलन के दौरान वे भी सुभाष बाबू को अपना नेता और हीरो मानते थे।

> देश की आजादी के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हम भारतीय उनके ऋणी हैं।
>
> **— स्वामी रामदेव**, योगगुरु

नेताजी से प्रेरणा ले समाज

देश में जब विध्वंसकारी शक्तियां देश के बाहर और अंदर से हमारी स्वतंत्रता, एकता और संविधान पर प्रहार कर रही हैं, ऐसे में भारत के प्रत्येक निवासी का ये कर्तव्य है कि वह नेताजी से प्रेरित होकर उन शक्तियों से लड़ने, उन्हें परास्त करने और देश के विकास में अपना पूर्ण योगदान करने का संकल्प ले। लेकिन साथियों, इन संकल्पों के साथ ही एक बात और महत्वपूर्ण है— यह बात है राष्ट्रीयता की भावना, भारतीयता की भावना। यहीं लाल किले पर मुकदमे की सुनवाई के दौरान, आजाद हिन्द फौज के सेनानी शहनवाज खान ने कहा था कि सुभाषचन्द्र बोस वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत के होने का एहसास उनके मन में जगाया। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत को भारतीय की नजर से देखना सिखाया। आखिर वे कौन-सी परिस्थितियां थीं, जिसकी वजह से शाहनवाज खान जी ने ऐसी बात कही थी ? भारत को भारतीय की नजर से देखना और समझना क्यों आवश्यक था— ये आज जब हम देश की स्थिति देखते हैं तो और स्पष्ट रुप से समझ पाते हैं।

स्वतंत्रता के बाद से भारत को इंग्लैंड के चश्मे से देखा गया

कैम्ब्रिज के अपने दिनों को याद करते हुए सुभाष बाबू ने लिखा था कि हम भारतीयों को ये सिखाया जाता है कि यूरोप, ग्रेट ब्रिटेन का ही बड़ा स्वरुप है, इसलिए हमारी आदत यूरोप को इंग्लैंड के चश्मे से देखने की हो गई है। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि स्वतंत्रता के बाद भारत और यहां की व्यवस्थाओं का निर्माण करने वालों ने भारत को भी इंग्लैंड के चश्मे से ही देखा। हमारी संस्कृति,

आजाद हिन्द फौज द्वारा भारत में पहली बार स्वस्थापित सरकार-आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ पर देश के वीरों को नमन करता हूँ। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के संघर्षों और आजाद हिन्द फौज के अमूल्य योगदान को याद करने का यह स्वर्णिम अवसर है। — **त्रिवेन्द्र सिंह रावत**, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

हमारी महान भाषाओं, हमारी शिक्षा व्यवस्था, हमारे पाठ्यक्रम को इससे बहुत नुकसान उठाना पड़ा। आज मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूं कि स्वतंत्र भारत के बाद के दशकों में अगर देश को सुभाष बाबू, सरदार पटेल जैसे व्यक्तित्वों का मार्गदर्शन मिला होता, भारत को देखने के लिए वह विदेशी चश्मा नहीं होता तो स्थितियां बहुत भिन्न होतीं।

जब एक परिवार ने भुलाया देश के सपूतों को

ये दु:खद है कि एक परिवार को बड़ा बनाने के लिए देश के अनेक सपूतों- वे चाहे सरदार पटेल, बाबा साहेब आम्बेडकर हों, उन्हीं की तरह ही नेताजी के योगदान को भी भुलाने का भरसक प्रयास किया गया है। अब हमारी सरकार स्थिति को बदल रही है। मैंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नाम पर एक राष्ट्रीय सम्मान शुरु करने की घोषणा की है। यह सम्मान शूरवीरों को, पुलिस के जवानों को अब हर साल नेताजी के नाम से दिया जाएगा।

पूर्वोत्तर पर दे रही सरकार विशेष ध्यान

ये हमारा दुर्भाग्य रहा है कि उत्तर-पूर्व और पूर्वी भारत के योगदान को जितना स्थान मिलना चाहिए था, उतना स्थान नहीं मिल पाया। विकास की दौड़ में भी देश का ये अहम अंग पीछे रह गया। आज मुझे संतोष होता है कि जिस पूर्वी भारत का महत्व सुभाष बाबू ने समझा, उसे वर्तमान सरकार भी उतना ही महत्व दे रही है।

सैन्य ताकत का जो सपना नेताजी ने देखा, वह पूरा हो रहा है

आज मैं कह सकता हूँ कि भारत एक ऐसी सेना के निर्माण की तरफ बढ़ रहा है जिसका सपना नेताजी ने देखा था। जोश, जुनून और जज्बा, ये तो हमारी सैन्य परम्परा का हिस्सा रहा ही है, अब तकनीक और आधुनिक शक्ति भी उसके साथ जोड़ी जा रही है। हमारी सैन्य ताकत हमेशा से आत्मरक्षा के लिए ही रही है और आगे भी रहेगी। हमें कभी किसी दूसरे की भूमि का लालच नहीं रहा। हमारा सदियों से इतिहास है, लेकिन भारत को संप्रभुता के लिए जो भी चुनौती बनेगा, उसको दोगुनी ताकत से जवाब मिलेगा। सेना को सशक्त करने के लिए बीते चार वर्षों में अनेक कदम उठाए गए हैं। दुनिया की बेहतरीन तकनीकों से भारतीय सेना को सुसज्जित बनाया जा रहा है। सेना की क्षमता हो या फिर बहादुर जवानों के जीवन को सुगम और सरल बनाने का काम हो- बड़े और कड़े फैसले लेने का साहस इस सरकार में है और ये आगे भी बरकरार रहेगा।

इतिहास के पन्नों से

- 23 जनवरी, 1897 को जन्मे सुभाषचन्द्र बोस 1938-39 में कांग्रेस के अध्यक्ष बने। ऐसा माना जाता है कि उनका कांग्रेस अध्यक्ष बनना नेहरू को तनिक भी पसंद नहीं था। गांधी जी के हस्तक्षेप के बाद नेताजी को अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा।
- कहा जाता है कि नेताजी का निधन एक विमान दुर्घटना में हो गया था, लेकिन इस पर आज तक कोई भरोसा नहीं करता है। नेताजी 18 अगस्त, 1945 को ताइवान से जापान जा रहे थे। ताइवान के अधिकारियों का कहना है कि उस दिन कोई विमान दुर्घटना हुई ही नहीं थी। यह भी कहा जाता है कि वह विमान मंचूरिया की हवाई पट्टी पर सही सलामत उतरा भी था। इन दिनों वह इलाका सोवियत संघ के कब्जे में था।

आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री ने वीर सेनानियों को न केवल याद किया बल्कि सुभाषचन्द्र बोस को तथा देश की स्वतंत्रता में उनके योगदान को वह पहचान और सम्मान दिया जो बहुत पहले मिलना चाहिए था।

— **डॉ. महेश शर्मा**, केन्द्रीय मंत्री

जानकारों का कहना है कि विमान से उतरते ही सोवियत संघ के फौजियों ने नेताजी को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें मास्को ले जाया गया। उन्हें 17 महीने तक यातना गृह में रखा गया। इसके बाद जेल में बंद कर दिया गया। 11 साल बाद उनका निधन हो गया, लेकिन भारत में ऐसे लोगों की संख्या करोड़ों में है, जो मानते हैं कि उनकी मृत्यु से जुड़ी हर खबर झूठी है।

- 2015 में आई.बी. की दो फाइलें सार्वजनिक किए जाने के बाद यह तथ्य सामने आया था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू दो दशक तक नेताजी सुभाषचंद्र बोस के परिवार की जासूसी करवाते रहे थे। 1948 से लेकर 1968 तक नेहरू नेताजी के परिवार पर कड़ी निगरानी के लिए जासूसी प्रणाली का निजी हितों में बेजा इस्तेमाल करते रहे थे।
- ब्रिटिश लेखागार से प्राप्त जानकारी के अनुसार नेताजी के संबंध में भारत का खुफिया विभाग आईबी, ब्रिटिश खुफिया विभाग एमआई-5 को सूचनाएं भी मुहैया कराता था।
- 1947 में नेताजी के एक करीबी ए.सी. नाम्बियार ने स्विट्जरलैंड से नेताजी के भतीजे अमिय बोस के नाम कलकत्ता में पत्र लिखा। इस पत्र की एक प्रति भारत के खुफिया विभाग ने ब्रिटिश खुफिया तंत्र एमआई-5 को मुहैया कराई। ब्रिटिश लेखागार से मिला यह पत्र, इस बात की तस्दीक करता है कि नेताजी के परिवार की जासूसी आईबी द्वारा कराई जा रही थी। यानी वहीं से आईबी की भूमिका पर संदेह पैदा हो जाता है। (साभार- पाञ्चजन्य)

उच्च न्यायालय ने खारिज की अयोध्या में विवादित स्थल पर नमाज की याचिका

नई दिल्ली। इलाहाबाद (प्रयागराज) उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने अयोध्या में विवादित स्थल पर नमाज पढ़ने की अनुमति मांगने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। उच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता पर पांच लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। उच्च न्यायालय ने कहा कि याचिका 'पब्लिसिटी' हासिल करने के लिए दायर की गई थी। अल रहमान ट्रस्ट द्वारा दायर याचिका के कारण अदालत का समय नष्ट हुआ है। न्यायालय ने अयोध्या जिले के डीएम को सख्ती के साथ राशि वसूलने का निर्देश दिया है।

अल रहमान ट्रस्ट रायबरेली की पंजीकृत संस्था है। यह मुसलमानों की शिक्षा और इस्लाम के प्रसार के लिए काम करती है। उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच में दायर याचिका में मांग की गई थी कि अयोध्या में विवादित स्थल पर मुसलमानों को नमाज पढ़ने की अनुमति दी जाए। याचिका में केन्द्र व राज्य सरकार सहित अयोध्या (फैजाबाद) के मंडलायुक्त (रिसीवर) और जिलाधिकारी को भी पक्षकार बनाया गया था।

ट्रस्ट का कहना था कि अयोध्या में विवादित स्थल पर भगवान रामलला की मूर्ति रखी है। वहां पर हिन्दुओं को पूजा करने की अनुमति है तो मुसलमानों को भी वहां नमाज पढ़ने की अनुमति दी जानी चाहिए। याचिका में उच्च न्यायालय के 2010 के उस आदेश का हवाला भी दिया गया था, जिसमें कहा गया था कि विवादित भूमि पर मुसलमानों का भी एक तिहाई हिस्सा है।

प्रदेश सरकार की ओर से मुख्य स्थायी अधिवक्ता श्री प्रकाश सिंह ने याचिका का विरोध किया। उनका तर्क था कि इस विवादित स्थल का मसला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, ऐसे में इस प्रकार की याचिका दायर नहीं की जा सकती। विवादित स्थल पर यथास्थिति कायम रखने का आदेश पहले से चला आ रहा है। याची ट्रस्ट 2017 में पंजीकृत हुआ है।

कानून को आचरण में लाने के लिए धर्म का जागृत होना आवश्यक : डॉ. मोहन भागवत

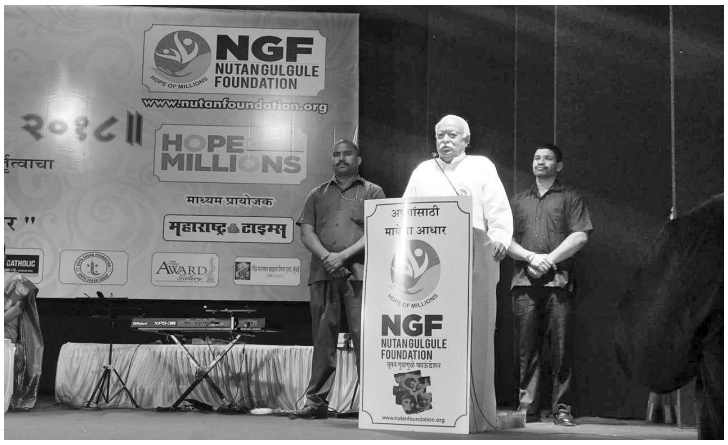

मुंबई (विसंकें)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि ''समाज के लिए कानून बनाए जाते हैं। परन्तु जो कानून में है, उसे आचरण में लाने के लिए धर्म का जागृत होना आवश्यक है। समाज धर्म से चलता है। धर्म का अर्थ पूजा नहीं, बल्कि धर्म का अर्थ मानवता है। मानवता धर्म का आचरण कैसा होना चाहिए, यह बताने वाला यह कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमने आज मानवता का अनुभव किया है। यह मानवता धर्म हमारे भी प्रत्यक्ष आचरण में आना चाहिए। अपनी क्षमता के अनुसार हमें यह कार्य करना चाहिए। धन, श्रम, कल्पना, योजना आदि मार्गों से यह कार्य किया जा सकता है, करना ही चाहिए। इन विशेष व्यक्तियों ने किन्तु-परन्तु का कोई पर्याय हमारे लिए शेष नहीं रखा है''।

सरसंघचालक जी नूतन गुलगुले फाउंडेशन द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में संबोधित कर रहे थे। नूतन गुलगुले फाउंडेशन (एनजीएफ) ने विशेष उपलब्धि हासिल करने वाले दिव्यांगजनों और दिव्यांगजनों के लिए कार्यरत संस्थाओं को सम्मानित करने के लिये मुंबई के रविंद्र नाट्य मंदिर में समारोह का आयोजन किया था।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

कांग्रेस को उच्च न्यायालय से झटका -

न्यायालय ने दिया हेरॉल्ड हाउस को खाली करने का आदेश

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कांग्रेस को झटका देते हुए हेरॉल्ड हाउस को खाली करने का आदेश दिया है। कांग्रेस को हेरॉल्ड हाउस दो सप्ताह में खाली करना होगा। न्यायालय ने कहा है कि यदि उसके आदेश का पालन नहीं हुआ तो कार्रवाई की जाएगी। जस्टिस सुनील गौड़ की कोर्ट ने 22 नवंबर को फैसला सुरक्षित रख लिया था।

केन्द्र सरकार ने एजेएल को 15 नवंबर तक परिसर खाली करने का आदेश दिया था। जिसके बाद नेशनल हेरॉल्ड प्रकाशक ने शहरी विकास मंत्रालय के 30 अक्टूबर के फै सले को उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी। सरकार ने 56 साल पुरानी लीज को समाप्त करते हुए आईटीओ के प्रेस एनक्लेव स्थित बिल्डिंग को खाली करने का आदेश दिया था।

न्यायालय में मामले की सुनवाई के दौरान केन्द्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि इंडियन एक्सप्रेस बिल्डिंग से जुड़ा फैसला गलत तरीके से कोट किया गया है। पब्लिक प्रॉपर्टी को जिस वजह से दिया गया, हेरॉल्ड हाउस में कुछ साल से उसका इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। यह सरासर गलत है कि सरकार नेहरू की विरासत को खत्म करना चाहती है। जब हेराल्ड हाउस का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा था, तब बिल्डिंग को खाली करने के लिए कई बार नोटिस दिया गया। उच्च न्यायालय ने पूछा था कि जब

(शेष पृष्ठ १४ पर)

1984 में हुए सिक्ख कत्लेआम का पूरा सच देश के सामने लाया जाए

— सरदार बृजभूषण सिंह बेदी

जालंधर (विसंकें)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा 1984 के सिक्खों के नरसंहार मामले में दोषी सज्जन कुमार को उम्रकैद व दो अन्यों को दस-दस साल के कारावास की सजा का स्वागत करते हुए इसे पीड़ित समाज के जख्मों पर मरहम की संज्ञा दी और पूरे दुखांत की सच्चाई देश के सामने लाए जाने की मांग की। संघ के पंजाब प्रांत संघचालक सरदार बृजभूषण सिंह बेदी ने कहा कि पीड़ितों को पूरा न्याय उस समय मिलेगा, जब दंगे के आरोपियों के साथ-साथ इनको रोकने की जिम्मेवारी में असफल रहे प्रशासन तंत्र, राजनीति तंत्र के दोषियों को सजा मिलेगी।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति में सरदार बृजभूषण सिंह बेदी ने कहा कि सिक्ख दंगों के दोषी सज्जन कुमार को उम्रकैद की सजा सुनाया जाना स्वागत योग्य है, लेकिन यह पीड़ित समाज के जख्मों पर केवल मरहम लगाए जाने जैसा है। बड़े षड्यंत्रकारी अभी भी पर्दे के पीछे हैं। पीड़ितों को पूरा न्याय तब मिलेगा, जब इन आरोपियों के साथ दंगों की साजिश रचने वालों को भी सजा मिले।

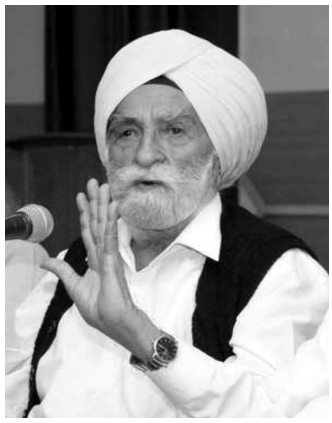

संघ के प्रांत संघचालक सरदार बेदी ने कहा कि दंगों के दौरान न केवल हजारों निर्दोष लोग मारे गए और करोड़ों की संपत्ति स्वाहा हुई, बल्कि दुनिया में भारत की छवि को भारी धक्का लगा। देश विरोधी ताकतों के हाथों में हमारे युवाओं को गुमराह करने का बहुत बड़ा हथियार इन दंगों ने थमा दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि इस नरसंहार के सभी दोषी पकड़े जाएंगे और उन्हें कठोरतम सजा दी जाएगी। उन्होंने क्षोभ जताया कि पिछले 34 सालों से सिक्ख समाज न्याय पाने के लिए दर-दर की ठोकरें खाता रहा और सत्ताधीश पीड़ितों को न्याय दिलाने की बजाय आरोपियों को ही बचाने में व्यस्त रहे। इन दंगों की साजिश रचने वाले सूत्रधार और बचाने वाले भी जल्द ही कानून के दायरे में आएं और उन्हें सजा मिले, तभी सिक्ख समुदाय को पूरा न्याय मिलेगा।

चश्मदीद ने कहा कि उसके सामने जला दिया गया भाईयों को

सिक्ख नरसंहार मामले में फैसला सुनाते जज भी हुए भावुक

नई दिल्ली। 1984 सिक्ख नरसंहार के मामले में दोषी सज्जनकुमार पर निर्णय सुनाते वक्त न्यायालय में जज भी भावुक हो गए। सजा का निर्णय सुनते ही दोषियों के वकीलों के चेहरे पर भी मायूसी साफ झलक रही थी। मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के निर्णय को पलटते हुए सज्जनकुमार को उम्रकैद की सजा सुनाई। न्यायालय ने सज्जनकुमार पर 05 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जबकि बाकी दोषियों को जुर्माने के तौर पर एक-एक लाख रुपये देने होंगे।

उच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाते हुए कहा कि कई दशक से लोग न्याय का प्रतीक्षा कर रहे हैं। जांच एजेंसियों पर भी टिप्पणी करते हुए कहा कि ये जांच एजेंसियों की नाकामी है कि अब तक इस मामले में कुछ नहीं हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद पूरे देश में सिक्ख विरोधी दंगे शुरू हो गए थे और एक नवंबर 1984 को दिल्ली कैंट के राजनगर क्षेत्र में दो सिक्ख परिवारों के पांच सदस्यों की हत्या कर दी गई थी।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

समाज परिवर्तन का आंदोलन है संघ : दीपक विसपुते

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य क्षेत्र के क्षेत्र प्रचारक दीपक विस्पुते जी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज परिवर्तन का आंदोलन हैं। संघ के कार्यकर्ता समाज जागरण के कार्य में संलग्न हैं। संघ मानता है कि देश का आम जनमानस जब तक खड़ा नहीं होगा तब तक देश का परिवर्तन संभव नहीं। बाकी सब बदलाव सहायक होते हैं किन्तु स्थायी परिवर्तन जनमानस के जागृत होने पर आता है। संघ, शाखा के माध्यम से व्यक्ति निर्माण का कार्य करता हैं। इसके साथ ही देश की सभी सज्जन शक्तियों के माध्यम से अपने देश को शीर्ष पर ले जाने के लिए हम प्रयासरत हैं। वे महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के संघ शिक्षा वर्ग (प्रथम वर्ष) के प्रकट समारोह में संबोधित कर रहे थे। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात अभिनेता एवं संस्कार भारती, मध्यभारत प्रांत के अध्यक्ष राजीव वर्मा जी उपस्थित रहे।

क्षेत्र प्रचारक दीपक जी ने कहा कि संघ को जो जिस रूप में देखता है उस रुप में उसकी कल्पना करता है। कोई संघ को सेवा कार्य करने वाला संगठन मानता है, कोई मैदान पर खेल-कूद करने वाले बच्चों का संगठन तो कोई और कुछ मानता है। किन्तु संघ वास्तव में सामाजिक परिवर्तन का आंदोलन है। संघ ने अपने प्रारंभ से ही तय किया हुआ है कि वह अकेला नहीं चलेगा। वह समाज को साथ लेकर चलेगा। समाज जागरण का कार्य भी समाज की सज्जनशक्ति को साथ लेकर करेगा। संघ किसी के विरोध में खड़ा नहीं हुआ है। संघ सबको साथ लेकर चलने के लिए खड़ा हुआ है। इसलिए संघ अनेक प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप में नहीं पड़ता। हम मानते हैं कि समूचा समाज ही हमारा अपना है। ऋग्वेद में लगभग 33 बार आर्य शब्द का उल्लेख है। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ। हम सब मिलकर दुनिया को श्रेष्ठ बनाने का कार्य करेंगे।

आपके हाथों में सुरक्षित है राष्ट्र - राजीव वर्मा।

मुख्य अतिथि राजीव वर्मा जी ने कहा कि हम जैसे अनेक लोग निश्चिंत हैं क्योंकि अपना राष्ट्र आपके हाथों में सुरक्षित है। जब वह बचपन में क्रिकेट खेलने मैदान पर जाते थे। तब वहाँ संघ की शाखा को देखते थे। संघ और उसकी शाखा के प्रति तबसे एक आकर्षण मन में रहा। यह पहला अवसर है जब मैं संघ के इस प्रकार के किसी कार्यक्रम में शामिल हुआ हूँ। युवा स्वयंसेवकों का उत्साह, अनुशासन और सामूहिकता ने मुझे प्रभावित करने के साथ एक विश्वास भी मन में जगाया है कि यह युवा पीढ़ी देश को आगे ले जाएगी, उन्होंने कहा कि भारत दुनिया का सबसे अधिक युवा देश है। हमारे पास युवा जनसंख्या सबसे अधिक है। यह हमारी ताकत है। यह युवा जनसंख्या हमारी कमजोरी भी बन सकती है। यदि युवाओं को सही दिशा का बोध नहीं कराया जाएगा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को देख कर एक विश्वास उत्पन्न होता है कि भारत का युवा पथभ्रमित नहीं हो सकेगा। युवाओं को पाथेय देने के लिए संघ है। युवाओं को संस्कारित करने वाला और उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने वाला, संघ अब हर क्षेत्र में उपस्थित है। उन्होंने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित व्याख्यानमाला का भी जिक्र किया। सरसंघचालक जी ने दो दिन में जिस प्रकार से विषय रखे, उससे स्पष्ट होता है कि संघ भारत को विश्व गुरु के रुप में देखना चाहता है।

प्रयागराज कुंभ में पहली बार 71 देशों के राष्ट्रीय ध्वज लहराएंगे

15 जनवरी से प्रयागराज में शुरू होने वाले कुंभ मेला की तैयारियों को देखने के लिए विदेश राज्यमंत्री वीके सिंह जी 71 देशों के रायजनयिकों को लेकर प्रयागराज पहुंचे। उन्होंने कहा कि राजनयिकों के समक्ष कुंभ मेले में सुरक्षा और सुविधाओं की दृष्टि से जो प्रस्तुति दी गई, उससे सभी संतुष्ट होकर जाएंगे और संयुक्त राष्ट्र के 192 देशों में से प्रत्येक देश से कम से कम एक नागरिक कुंभ मेले में जरुर आएगा।

राजनयिक प्रयागराज से जब सुखद और यादगार अनुभव लेकर लौटेंगे तो अपने-अपने देशों के लोगों को भी कुंभ में आने के लिए एडवाइजरी जारी करेंगे। संगम तट स्थित वीआईपी घाट पर बने पंडाल में विभिन्न देशों के राजनयिकों के समक्ष दी गई प्रस्तुति के बाद उन्होंने बताया, इन प्रस्तुतियों में वह सब कुछ बताया गया जो कुंभ की तैयारियों में होता है। इनमें सुरक्षा, साफ सफाई, रहने का इंतजाम, आवागमन के साधन शामिल हैं। विदेश राज्यमंत्री ने कहा कि राजनयिकों के मन में सुरक्षा, स्वच्छता आदि के बारे में जो भी शंका रही होगी, आज वह दूर हो गई होगी। संगम तट पर पूजन-दर्शन के साथ ही फोटो सेशन किया गया। इसके बाद वहाँ अपने-अपने देशों के झंडे फहराए गए। प्रयागराज पहुंचे 71 देशों के राजनयिक में पाकिस्तान और चीन के राजनयिक नहीं हैं।

कुंभ मेले में 15 करोड़ लोग आएंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, हम प्रधानमंत्री के आभारी हैं कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र से कुंभ मेले को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की मान्यता दिलाई। मुझे उम्मीद है कि 15 जनवरी से चार मार्च तक चलने वाले इस मेले में 15 करोड़ लोग आएंगे। यहां 4,000 लग्जरी कॉटेज बनाए जा रहे हैं जो जहां पांच सितारा से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी। आप किसी अंतरराष्ट्रीय वेबसाइट पर इसकी बुकिंग करा सकते हैं।

इस साल होने वाले कुंभ मेले में अंगोला, अर्जेंटीना, आस्ट्रिया, अजरबैजान, बोलिविया, बुर्किना फासो, बुरुंडी, कनाडा, कंबोडिया, कोस्टारिका, क्रोएशिया, क्यूबा, जिबौती, डोमिनीसन रिपब्लिक, ईजिप्ट, ईआइ सल्वाडोर, ईक्यैट्यूरियल जीनिया, ईरीट्रिया, ईथोपिया, गेबान, गैंबिया, जार्जिया, ग्रीक, ज्यूनिया, कोरिया, किर्गिस्तान, इंडोनेशिया, इराक, लिसोथो, लीबिया, लीथ्यूनिया, लग्जमबर्ग, मेडागस्कर, मालावी, मलेशिया, माली, माल्टा, मारीशस, मैक्सिको, मोरक्को, न्यूजीलैंड, नाइजीरिया, नार्वे, पेलेस्टाइन, पैराग्वे, पोलैंड, पुर्तगाल, सेनेगल, सर्बिया, स्लोवेक रिपब्लिक, साउथ अफ्रीका, सूडान, सोमालिया, सूरीनाम, तंजानिया, त्रिनिदाद, ट्यूनिसिया, यूक्रेन, वेनेजुएला, उज्बेकिस्तान, वियतनाम, जांबिया, जिम्बाब्वे इन देशों के राजनयिक आए।

तीन ऐसे उदाहरण जिस पर नसीरुद्दीन शाह 'गायों' पर बात करने से चूक गए

अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने भारतीय संविधान के तहत सच्चाई के साथ जो कहा कि देश रहने के लिए सुरक्षित नहीं है। उनको ये कहने का पूरा अधिकार है कि पाकिस्तान में घर जैसा अहसास होता है। जो वो पहले कह चुके हैं। उन्होंने कहा कि एक पुलिस अफसर की तुलना में एक गाय की मौत को महत्व दिया जा रहा है (हालांकि एक बार पूछा जाना चाहिए कि दोनों के जीवन के मूल्य की तुलना कैसे की जा सकती)। लेकिन अब भारतीय द्वारा उनके शब्दों पर हमला करने को उसी आधार पर समान्तर जायज नहीं ठहराया जा सकता है।

उनके खिलाफ अजमेर लिटरेचर फेस्टिवल में विरोध और विरोध करने वालों ने किसी हिंसा का सहारा नहीं लिया। यह पूरी तरह से नियमसंगत है। अपने विचारों को व्यक्त करने की आजादी एक तरफा नहीं हो सकती है, जैसे सांप्रदायिकता और राजनीति की पहचान एक तरफा नहीं हो सकती है। शाह अपने मुस्लिम साथियों के लिए बोलने के लिए पूरी तरह से हकदार हैं और वह ऐसा पहले भी कर चुके हैं। लेकिन पहचान की राजनीति, पहचान की राजनीति को भूल जाती है। जो कह रहे हैं कि उन्होंने हिंदुओं को एक व्यापक, अंधेरे में रखा तो वो भी उसी तरह से अपने विचारों को रखने के लिए समान हैं।

हम लोगों की तरह कई लोग अभी भी क्रांतिकारी अभिनेता नसीरुद्दीन शाह से प्यार करते हैं। खुले तौर पर उनके बोलने के साहस का सम्मान करते हैं। वह असहिष्णुता, अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर होने वाली हिंसा, गाय के नाम पर हत्या पर और सेलिब्रिटी के साथ भयावह व्यवहार पर बोलने में विफल रहे।

गौ तस्करों द्वारा हत्या—जिस घटना के लिए शाह ने विवादित बयान दिया है। उसी के परिप्रेक्ष्य में बताना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में 2015 में गौ तस्करों ने एक सब इंस्पेक्टर मनोज मिश्रा की हत्या कर दी थी। गाय के तस्करों द्वारा हर साल कई लोगों को पूरे भारत में मारा जा रहा है। गौ तस्करों द्वारा 2015 में प्रशांत पुजारी का अपहरण कर उसकी हत्या तलवारों और चापर से की थी। जबकि 2016 में बीएसएफ के सिपाही की हत्या बंगाल में गौ तस्करों द्वारा की गयी थी।

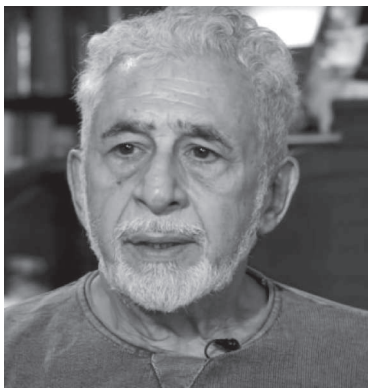

गौ तस्करों के लिए गाय के गोश्त की अहमियत सीमा के रक्षक से ज्यादा थी। गौ तस्करों ने आगरा में चरण सिंह की हत्या की और उसी वक्त गौ तस्करों ने आगरा में ही दलित के ऊपर गाड़ी चढ़ा दी और उसको मार दिया था। पिछले साल ही मणिपुर में गौ तस्करों ने तीन ग्रामीणों की हत्या कर दी और गत अगस्त 2018 में उत्तर प्रदेश के औरेया में गौ तस्करों ने दो साधुओं की हत्या कर दी, जबकि अन्य को बुरी घायल कर दिया और उसकी जुबान काट दी। करोड़ों किसान देश में मवेशियों के जरिए जीवन यापन कर रहे हैं और इनमें से कई लोग गौ तस्करों के खतरनाक डर के साथ जी रहे हैं, लेकिन शाह ने कभी इन लोगों के बारे में कुछ नहीं बोला।

बोलने की आजादी का गला दबाने के लिए—कोलकाता में तस्लीमा नसरीन की पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम को रोकना और उसी दौरान हिंसा होना और सलमान रूश्दी को लिटरेरी फे स्टिवल में

आने से रोकने के लिए नसीरुद्दीन शाह के पास विरोध करने के लिए शब्द नहीं थे। यही नहीं जब पत्रकार अभिजीत अय्यर मित्रा को जेल में पचास दिन तक रखा। 2015 में ही हिन्दू समाज पार्टी के नेता कमलेश तिवारी की मोहम्मद साहब पर की गयी एक टिप्पणी के बाद बंगाल, उत्तरप्रदेश और बिहार के तीन शहरों को आग के हवाले कर दिया गया था। सबसे ज्यादा बुरा हाल तो मालदा का था, जहां पर एक लाख से ज्यादा भीड़ ने पुलिस स्टेशन के साथ ही बस, घर और दुकानों को भी जला दिया था।

यही नहीं घरों के साथ ही शनि और दुर्गा के कई मंदिरों में भी आग लगा दी थी। हजारों लोगों की जान खतरे में पड़ गयी थी और वह अपने स्थानों में डर के साथ रह रहे थे, वह भी एक टिप्पणी के कारण। यह एक ऐसा केस है जो उनके बोलने के लिए उपयुक्त था। लेकिन वह नहीं बोले।

केवल विराट कोहली बॉलीवुड क्यों नहीं— शाह को सबसे ज्यादा समस्या भारत क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली के मैदान में उनकी आक्रामकता के साथ ही कभी-कभार बोले जाने वाले अपशब्दों को लेकर है। लेकिन ये इससे भी गंभीर है कि फिल्म स्टार जानवरों को मार रहे हैं, कई लोगों को गाड़ियों से रौंद रहे हैं, किसी व्यापारी को पांच सितारा होटल में सरेआम थप्पड़ मार रहे हैं, पुलिस वालों को गाली दे रहे हैं या फिर अपने घरेलू काम करने वाली के साथ रेप कर रहे हैं। पनामा पेपर में नाम आ रहे हैं या फिर अपने घरों में ऑटोमैटिक राइफल रख रहे हैं। इस तरह के उदाहरणों में कितनी बार उन्होंने एक्टर, डायरेक्टर्स और कॉमेडियन के खिलाफ खुलकर इस तरह के आश्चर्य करने वाले बर्ताव पर बोला?

भारत में हर किसी धर्म, जाति और मजहब का व्यक्ति नसीरुद्दीन शाह की प्रशंसा और सम्मान करता हैं। उनकी तरह के प्रमुख व्यक्ति को जब किसी अन्याय के खिलाफ बोलना चाहिए तो उन्हें अपने को चुनिंदा और सीमित करके बात करनी चाहिए ? क्या उन्हें एक समुदाय पर आक्षेप करना चाहिए ? क्या इसके लिए उनके पास अधिकार है ? यह एक नैतिक रुप संदिग्ध है।

चतुर कांग्रेस ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को अपमानित किया है : प्रधानमंत्री

पीएम मोदी ने ईवीएम, डीएनए का जिक्र कर कांग्रेस पर साधा निशाना

चेन्नई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस पर कई आरोप लगाते हुए हमला बोला। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने लोकतंत्र के लिए जरूरी संस्थाओं को लगातार अपमानित किया है। मोदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने सेना और कैग जैसी संस्थाओं को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का डीएनए अभी भी वैसा ही है। जब जीतते हैं तो कहते हैं ईवीएम ठीक है और नतीजे से पहले उसी ईवीएम पर संदेह भी पैदा कर देते हैं। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, ''हमें लोगों को कांग्रेस और उसके खतरनाक खेल के बारे में जानकारी देते रहना चाहिए।'' मोदी ने कहा, ''कांग्रेस के गैर-लोकतांत्रिक व्यवहार का सबसे बेहतर जवाब यह है कि लोकतंत्र को मजबूत किया जाए। जानकारी और सजगता लोकतंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।''

नसीरुद्दीन शाह की संवेदना सलेक्टिव क्यों? किसके इशारे पर दिया यह बयान? - विहिप

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद का कहना है कि पैसे लेकर अभिनय करना नसीरुद्दीन शाह का पेशा है। बुलंदशहर की घटना पर दिया गया उनका बयान भी इसी प्रकार प्रायोजित लगता है। विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने कहा कि अब सबको स्पष्ट हो गया है कि पिछले चुनाव से पहले इसी प्रकार पुरस्कार वापसी ब्रिगेड का अभियान पूरी तरह प्रायोजित था। साफ लगता है कि 2019 नजदीक आते-आते इस प्रकार के बयानों की श्रृंखला प्रारंभ होने वाली है। कई बरसाती मेंढक अपने निराधार बयानों को लेकर सामने आएंगे। परंतु नसीरुद्दीन शाह का ताजा बयान केवल राजनैतिक ही नहीं, बल्कि घोर सांप्रदायिक व देश के माहौल को बिगाड़ने वाला भी है। उन्होंने चेताया कि ऐसे लोग गौरक्षा के कार्य को अपमानित करके हिन्दुओं की भावनाओं को आहत करने का दुस्साहस न करें।

डॉ. जैन ने पूछा कि 1984 में सिक्खों व 1990 में कश्मीर घाटी में हिन्दुओं के नरसंहार के समय इनकी संवेदना व क्रोध क्यों प्रकट नहीं हुआ था? जब गोधरा में महिलाओं और बच्चों समेत 59 मासूम हिन्दुओं को जिंदा जलाया गया था, तब इनका क्रोध क्यों शांत हो गया था? मल्लापुरम जैसे कई मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में रमजान के अवसर पर हिन्दू बच्चों को स्कूल के शौचालय में जाकर भोजन करना पड़ता है। क्या यह घटना किसी की संवेदनाओं को झकझोरने के लिए पर्याप्त नहीं है? अंकित, चंदन, प्रशांत पुजारी, अरुण माहोर जैसे सैकड़ों हिन्दुओं की हत्या जिहाद के नाम पर कर दी जाती है, तब क्यों इनका ट्विटर शांत हो जाता है? इन्हीं के शहर मुंबई के आजाद मैदान में जब उन्मादी जिहादियों की भीड़ हिंसा का नंगा नाच खेलती है और शहीद स्मारक को ध्वस्त कर देती है, तब इन कथित सेक्युलरवादियों में से किसी एक की भी आवाज क्यों नहीं उठी?

उन्होंने कहा कि ये लोग देश की जनता के द्वारा सर माथे पर चढ़ाए जाते हैं। परंतु चंद स्वार्थों के कारण ये देश का माहौल खराब करते हैं। इनको यह जवाब तो अवश्य देना होगा कि ये जिस देश में रहते हैं और जिस देश ने उनको बड़ा बनाया है, वे उसी देश के माहौल को तनावपूर्ण क्यों बनाना चाहते हैं? एक चुनी हुई सरकार को हटाने के लिए किसी राजनीतिक संरक्षण के कारण क्यों वे देश में सांप्रदायिक तनाव फैलाना चाहते हैं?

विश्व हिन्दू परिषद इस तरह के बयानों की कठोरतम शब्दों में निंदा करती है और उम्मीद करती है कि पिछले चुनावों की तरह इस बार ये लोग देश के माहौल को खराब करने के लिए अपना कंधा नहीं सौंपेंगे। विहिप किसी भी हत्या की निंदा करती है, चाहे वह किसी मानव की हो या गौमाता की। परन्तु गौरक्षा के कार्य को अपमानित करके वे हिन्दुओं की भावनाओं को आहत न करें।

भारत विरोधी नारे लगा रहे देशद्रोहियों से निपटने का संविधान में प्रावधान नहीं

नई दिल्ली। भारत विरोधी नारे लगाने वाले देशद्रोहियों और सेना या अर्द्धसैनिक बलों को पत्थर मारने वालों से निपटने के लिए संविधान में कोई प्रावधान नहीं है। केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने राज्यसभा में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में लागू विभिन्न कानूनों के तहत ही इनसे निपटा जा रहा है। राज्यसभा में सवाल पूछा गया था कि क्या जम्मू कश्मीर में दो प्रकार के लोग हैं। एक राष्ट्रवादी और दूसरे देशद्रोही?

(पृष्ठ ७ का शेष)

समारोह में **ध्येयपूर्ति पुरस्कार 2018** से 14 व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। मंच पर सारस्वत बैंक के अध्यक्ष गौतम ठाकुर, ज्येष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रेखा डावर और नूतन गुलगुले और पुष्कर गुलगुले उपस्थित थे। अपने दिव्यांग पुत्र पुष्कर का पालन करते समय आई कठिनाइयों को लांघकर नूतन और विनायक गुलगुले दम्पति ने संस्था की स्थापना की थी। इस वर्ष कृषि, उद्योग, वैद्यकीय, विधि ऐसे विविध क्षेत्रों में यशस्वी दिव्यांग व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। माँ-पुत्र, दिव्यांग कुटुंब, ध्येयपूर्ति मृत्यु पश्चात् पुरस्कार आदि सम्मान दिए गए।

डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि धर्म सबको जोड़ता है, उन्नत करता है। कहीं भी अमंगल न करते हुए, हम पर सुख की वर्षा करता है। हाल ही में मुझे राजकोट में हुए साधु-सत्पुरुषों के एक सम्मेलन में उपस्थित रहने का अवसर मिला। वहाँ पर मेरे मन में जो भाव उत्पन्न हुए, उन्हीं का अनुभव मुझे आज यहाँ पर हो रहा है। अपनी कठिनाईयों को महत्व दिए बिना मेरे सामने बैठे व्यक्तियों ने अपना जीवन उन्नत किया है। साथ ही मानवता का धर्म निभाते समय समाज के अभावग्रस्त व्यक्तियों की उन्नति के लिए भी कष्ट उठाए हैं। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' यह प्रार्थना इन दिव्यांग व्यक्तियों ने सार्थक की है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

हेरॉल्ड हाउस से समाचार पत्र निकाला जा रहा है तो क्या अभी बिल्डिंग वापस ली जा सकती है।

इस पर तुषार मेहता ने कहा कि उन्होंने समाचार पत्र उस समय शुरू किया, जब सरकार ने कार्रवाई करने और लीज रद्द करने का फैसला कर लिया था। वहीं एजेएल की ओर से पेश अभिषेक मनु सिंघवी ने कोर्ट के समक्ष कुछ फोटोग्राफ भी पेश किए। सिंघवी ने कहा था सभी प्रिंट और प्रेस का काम परिसर से हो, ऐसा जरूरी नहीं है। एक नई प्रिंटिंग प्रेस का काम परिसर से हो, ऐसा जरूरी नहीं है। एक नई प्रिंटिंग प्रेस लगाई जा चुकी है।

भाजपा के सुब्रमण्यम स्वामी ने पटियाला हाउस कोर्ट में नेशनल हेरॉल्ड मामले में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, सोनिया गांधी, मोतीलाल वोरा सहित अन्य पर आरोप लगाया था कि उन्होंने साजिश के तहत महज 50 लाख रुपये का भुगतान कर धोखाधड़ी की। इसके जरिये यंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने 90.25 करोड़ रुपये की वह रकम वसूलने का अधिकार हासिल कर लिया, जिसे एसोसिएट जर्नल्स लिमिटेड को कांग्रेस को देना था। इस मामले में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, मोतीलाल वोरा, ऑस्कर फर्नांडिस, सुमन दुबे, सैम पित्रोदा और यंग इंडिया कंपनी आरोपी हैं। फिलहाल सभी आरोपी जमानत पर हैं। इस मामले में शिकायतकर्ता के बयान दर्ज हो चुके हैं।

(पृष्ठ ८ का शेष)

याचिका करने वालों को 34 साल के बाद न्याय मिला है। हाईकोर्ट ने कांग्रेस नेता सज्जनकुमार को दंगा भड़काने और साजिश रचने के दोष में आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

चश्मदीद की जुबानी उसकी कहानी

केस के गवाह जगशेर सिंह ने बताया कि नरसंहार में उसका परिवार खत्म हो गया और उन्हें दिल्ली छोड़कर पंजाब में बसना पड़ा। उनके एक भाई को उनके सामने आग लगाकर जला दिया गया था और बाकी दो को भी मार दिया गया था। भगवान ऐसा मंजर किसी को भी ना दिखाए। मेरे पूरे हंसते-खेलते परिवार को दोषियों ने खत्म कर दिया। जिस मोहल्ले में हम लोग मिलजुल कर रहते थे, वही लोग हमारे दुश्मन हो गए। उन्होंने कहा कि मेरे बाल कटे हुए थे, इसलिए मैं बच गया। लेकिन भड़काऊ भीड़ ने जानवरों की तरह लाशों को नोचा और काटा।

ठंड से राहत दिलाने वाले घरेलू उपाय

ठंड का कहर बढ़ता जा रहा है। आए दिन तापमान में गिरावट के नए रिकॉर्ड बनते जा रहे हैं। ऐसे में ठंड की मार से बचने के लिए क्या किया जाए यह अपने आप में एक बड़ा सवाल है। आइए जानते हैं कुछ घरेलू उपाय जिनके उपयोग से आप ठंड के कहर को कम कर सकते हैं।

तुलसी, लौंग, अदरक रखें ठंडक को दूर

तुलसी, लौंग, अदरक और काली मिर्च का दूध व चाय के साथ प्रयोग करना चाहिए। ये औषधियां ठंड के मौसम में बेहद लाभकारी साबित होती हैं। जानकार बताते हैं कि इनके सेवन से न सिर्फ ठंड से बचने में मदद मिलती है, बल्कि ये सर्दी, जुकाम से भी राहत दिलाने का काम करती हैं।

खजूर खाएं

सर्दियों के मौसम में खजूर के लाभ के बारे में आप बुजुर्गों से सुनते आए होंगे। खजूर की तासीर गर्म होती है और इसलिए इसे सर्दियों के लिए लाभकारी माना जाता है। खजूर को गर्म दूध के साथ खाने से सर्दी से तत्काल राहत मिलती है। यह न केवल बच्चों बल्कि हर उम्र के लोगों के लिए लाभकारी होता है।

सावधानी है जरूरी

- सबसे ज्यादा ठंड तड़के तीन से छह बजे के बीच होती है। ऐसे में बहुत जरूरी हो तभी इस समय घर से बाहर निकलें।
- सूर्योदय के बाद ही सुबह व्यायाम के लिए घर से निकलें। घर से निकलते समय पूरे शरीर को गर्म कपड़ों से ढक लें।
- खानपान में जहां तक संभव हो तरल पदार्थ का सेवन करें।
- ठंडा खाने से परहेज करें।
- ज्यादा समय तक सर्दी में न रहें।
- शाम को सूर्यास्त होते ही ठंड फिर से बढ़ने लगती है।

इस माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

- इस महीने में गन्ने की तैयार फसल की कटाई की जाती है एवं कटाई के बाद गुड़ बनाया जाता है।
- इसके उपरान्त गन्ने की नई फसल लगाने के लिए खेत को तैयार करते हैं छत्तीसगढ़ के किसान।
- जो गेहूँ देर से बोये जाते हैं, उस गेहूँ में प्रथम सिंचाई किरीट जड़ अवस्था में करते हैं। अर्थात बोने के 21–25 दिन बाद ये किया जाता है।
- रबी दलहनों में पहले सिंचाई के बाद निदाई गुड़ाई करते हैं।
- चना, मटर, मसूर में कटुआ इल्ली के कोप से फसलों की रक्षा की व्यवस्था करते हैं।
- मटर में 10–15 दिन के अंतर से ये फलियाँ तोड़ी जाती हैं।
- चना, बूट दाना भरने के बाद बेचने के लिये बाजार भेजा जाता है।
- सरसों, राई, अलसी, चना इत्यादि रबी फसलों में फूल आते समय सिंचाई करते हैं।
- इसी समय सूरजमुखी मक्का और चारे हेतु सुडान धास की बोनी आरम्भ करते हैं।
- इसी महीने में अमरुद, पपीते, आँवले और नींबू के पके फलों की तुड़ाई की जाती है।
- इसी महीने में टमाटर के पौधों को बांस की लकड़ी का सहारा दिया जाता है।
- आलू के पौधों पर मिट्टी चढ़ाई जाती है।

मानस प्रसंग गतांक से आगे —

गोस्वामी जी लिखते हैं कि, प्रजापति बनने पर दक्ष ने मुनियों को बुलाकर बड़ा यज्ञ करना निश्चित किया और इस यज्ञ में भाग ले पाने वाले सभी देवताओं को आमंत्रित किया।

किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा।
बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा॥
विष्नु बिरंचि महेसु बिहाई।
चले सकल सुर जान बनाई॥

अर्थात् दक्ष के यज्ञ का निमंत्रण पाकर किन्नर, नाग, सिद्ध, गंधर्व सहित, ब्रह्मा, विष्णु, महेश को छोड़कर, सभी देवतागण अपने-अपने विमान सजाकर चल पड़े। माता सती ने जब आकाश मार्ग में चले जा रहे अनेक सुन्दर विमान देखे, जिनमें देव-सुन्दरियों द्वारा किये जा रहे गान को सुनकर मुनियों का ध्यान टूटने लगा। माता सती के पूछने पर शिव जी ने उन्हें सब बातें विस्तार से बताई, जिससे पिता के यज्ञ की जानकारी पाकर माता सती को प्रसन्नता हुई और वे सोचने लगी कि यदि महादेव जी की अनुमति मिल जाये तो इसी बहाने कुछ दिन पिता के घर पर रहूँ। माता सती के हृदय में पति द्वारा त्यागे जाने का भारी दु:ख था, किन्तु अपराध बोध के कारण वे कुछ कह नहीं पाती। अंतत: उन्होंने भय, संकोच और प्रेमरस में सनी हुई मनोहर वाणी से शिवजी के समक्ष निवेदन किया :—

पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ॥

अर्थात् हे प्रभो! हे कृपा धाम! मेरे पिता के घर पर बहुत बड़ा उत्सव है, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं आदर सहित देखने जाऊँ। शिवजी ने कहा कि बात तो तुमने अच्छी कही और मुझे भी अच्छी लगी परन्तु उनके द्वारा निमंत्रण न देना अनुचित है। दक्ष ने अपनी सभी लड़कियों को बुलाया है, किन्तु हमारे बैर के कारण तुमको भी भुला दिया। शिव जी कहते है कि एक बार ब्रह्मसभा में वे अप्रसन्न हो गये थे तब से अब तक हमारा अपमान करते हैं। शिव जी ने आगे और भी कहा कि हे भवानी! यदि तुम बिना बुलाये जाओगी तो शील, स्नेह और मर्यादा नहीं रहेगी। शिव जी नीति बताते हुए कहते हैं :—

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा॥
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गएँ कल्यानु न होई॥

अर्थात् यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाए भी जाना चाहिये, किन्तु जहाँ कोई विरोध मानता हो उसके घर जाने में कल्याण नहीं होता। इस प्रकार शिव जी ने माता सती को अनेक प्रकार से समझाया किन्तु उनके हृदय में बोध नहीं हुआ। तब शिवाजी ने यह भी कहा कि यदि बिना बुलाए जाओगी तो हमारी समझ में अच्छी बात नहीं होगी। गोस्वामी जी आगे लिखते है :—

कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि॥
दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि॥

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

राष्ट्र जागरण में सहयोग करें

राष्ट्रीय साहित्य उपहार में दें...

पढ़िए एवं पढ़ाइए, घर - घर तक पहुंचाइए...

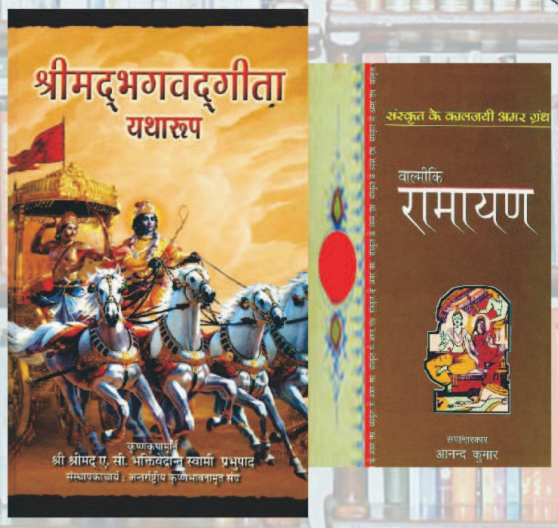

भगवती साहित्य संस्थान

स्वदेशी भवन, राम मंदिर मार्ग, शांति नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

सत्येन्द्रनाथ बोस
जयंती ०१ जनवरी

सावित्रीबाई फुले
जयंती ०३ जनवरी

लोचनप्रसाद पांडेय
जयंती ०४ जनवरी

माता जीजाबाई
जयंती १२ जनवरी

स्वामी विवेकानन्द
जयंती १२ जनवरी

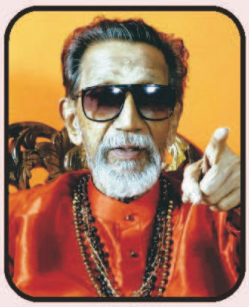

बालासाहेब ठाकरे
जयंती २३ जनवरी

रानी माँ गाइडिन्ल्यू
जयंती २६ जनवरी

लाला लाजपतराय
जयंती २८ जनवरी

के. एम. करियप्पा
जयंती २८ जनवरी

प्रो. राजेन्द्र सिंह
जयंती २९ जनवरी

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उद्घाटन सम्पन्न - 25 दिसम्बर 2018

असम - डिब्रुगढ़ जिले में ब्रह्मपुत्र नदी पर बने देश के सबसे बड़े रेल-सड़क पुल का शुभारंभ

प्रेषक,

शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - जनवरी २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर
शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट